गुरु गोरखनाथ जी
राजकीय महाविद्यालय हिसार

हिंदी विभागीय पत्रिका

स्वभाषा के प्रति अनुराग, स्वदेश के प्रति ममत्व और स्वावलंबन की भावना—ये सभी मनुष्य के आवश्यक गुण हैं।

राजपाल

सत्र : 2024-25

मई, 2025

हिन्दी विभागीय पत्रिका

हिंदी ... साहित्य... प्रौद्योगिकी...

हिंदी समृद्ध परम्परा की अगली कड़ी

वर्ष : 01 अंक 05 मई 2025

वैशाख | विक्रम संवत-2082

संस्थापक सम्पादक

डॉ राजपाल

सहायक सम्पादक

डॉ राजेंद्र प्रसाद

शमशेर सिंह

छात्र सम्पादक

किरण रानोलिया

रिनू

राहुल

संतोष

सम्पादकीय कार्यालय

हिंदी विभाग, गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय हिसार

9466370922, 9255451522, 9785775350

gchisarhindi@gmail.com

dr.rajhisari@gmail.com

एक नज़र

प्राचार्य संदेश

संपादकीय

गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

परिचय

बाबा साहब डॉक्टर अंबेडकर - एक परिच

ज्योतिबा फुले - एक परिचय

साहित्य प्रश्नोत्तरी

शब्द-सम्पदा

प्रशासनिक शब्दावली

स्मृति शेष

पुस्तक समीक्षा

संदेश

विज्ञान और प्रौद्योगिकी किसी भी राष्ट्र की प्रगति की रीढ़ होते हैं। आज जब हम 21वीं सदी के तीसरे दशक में प्रवेश कर चुके हैं, तो यह स्पष्ट है कि तकनीक न केवल हमारी जीवनशैली, बल्कि हमारे विचार, व्यवहार और भविष्य की दिशा को भी परिभाषित कर रही है। इस विशेषांक में "प्रौद्योगिकी" को केन्द्रीय विषय बनाकर हम उस परिवर्तनशील संसार का लेखा-जोखा प्रस्तुत कर रहे हैं, जो नवाचार, अनुसंधान और डिजिटल क्रांति से संचालित हो रहा है। प्रौद्योगिकी ने आज शिक्षा को परंपरागत कक्षाओं की सीमा से निकालकर ऑनलाइन शिक्षण, ई-लर्निंग, वर्चुअल लैब्स और एआई आधारित शिक्षण तकनीकों तक पहुँचा दिया है। कोविड-19 महामारी के दौरान हमने अनुभव किया कि तकनीक ने ही शिक्षण व्यवस्था को गतिशील बनाए रखा। यह परिवर्तन अब स्थायी स्वरूप ले चुका है, और इसके साथ हमें अपनी भूमिका भी पुनर्परिभाषित करनी होगी।साथ ही, यह भी आवश्यक है कि तकनीक केवल एक उपकरण नहीं, बल्कि एक समावेशी साधन बने। ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी पहुँच, डिजिटल साक्षरता, और स्थानीय भाषा में तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता नैतिक तकनीकी प्रयोग की जागरूकता, स्वदेशी नवाचारों को प्रोत्साहन और हर वर्ग की भागीदारी सुनिश्चित करना। हमारा महाविद्यालय भी इसी दिशा में प्रयासरत है — चाहे वह स्मार्ट क्लासरूम हों, डिजिटल पुस्तकालय, या तकनीकी क्लब की गतिविधियाँ। हमें गर्व है कि हमारे विद्यार्थी प्रौद्योगिकी के प्रति सजग, जिज्ञासु और नवोन्मेषी दृष्टिकोण रखते हैं। इस विशेषांक के माध्यम से हम यह आशा करते हैं कि विद्यार्थी न केवल तकनीकी जानकारी प्राप्त करें, बल्कि उसका समाजोपयोगी और मानवमूल्य आधारित प्रयोग भी सीखें। प्रौद्योगिकी तभी सार्थक है जब वह मानवता के हित में प्रयुक्त हो। आइए, हम सभी मिलकर ज्ञान, तकनीक और नैतिकता के समन्वय से एक प्रबुद्ध समाज की रचना करें।

प्राचार्य
डॉ विवेक कुमार सैनी

संपादकीय

प्रौद्योगिकी – युगबोध की नई पहचान

इस युगबोध की नई पहचान “प्रौद्योगिकी: नवयुग की शक्ति” विषय पर केंद्रित है, जो न केवल समय की माँग है, बल्कि हमारे समाज, शिक्षा और जीवन के हर पहलू से जुड़ा एक आवश्यक विमर्श भी है। आज प्रौद्योगिकी केवल विज्ञान की प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं रही, बल्कि हमारे हाथों में मोबाइल फोन से लेकर अंतरिक्ष तक फैले उपग्रहों तक इसकी उपस्थिति है। जहाँ एक ओर तकनीक ने जीवन को सरल, तीव्र और सुविधाजनक बनाया है, वहीं यह प्रश्न भी खड़ा किया है कि क्या हम इसके उपयोग में संवेदनशील और उत्तरदायी हैं? क्या यह प्रगति सर्वजनहिताय है, या कुछ वर्गों तक ही सीमित है? ऐसे समय में यह पत्रिका एक समीक्षात्मक संवाद का माध्यम बने, यही हमारा प्रयास है। इस विशेषांक में विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों और लेखकों ने तकनीकी विषयों को न केवल वैज्ञानिक दृष्टि से देखा है, बल्कि मानवीय, सामाजिक, भाषिक और नैतिक दृष्टिकोण से भी विश्लेषण प्रस्तुत किया है। एआई और शिक्षा की बदलती दिशा, डिजिटल समावेशन की चुनौतियाँ, तकनीक में भाषा की भूमिका, भारतीय तकनीकी चेतना और आत्मनिर्भर भारत का सपना। हमें यह स्वीकार करना होगा कि तकनीक स्वतः शुभ या अशुभ नहीं होती, उसका स्वरूप हमारी सोच, नीति और उपयोग पर निर्भर करता है। आज जब विश्व तेज़ी से बदल रहा है, तब एक युवा विद्यार्थी को केवल तकनीकी दक्षता ही नहीं, समाज के प्रति जागरूक दृष्टिकोण भी विकसित करना होगा। इस विशेषांक में सम्मिलित सामग्री पाठकों को न केवल जानकारी देगी, बल्कि सोचने, प्रश्न करने और दिशा चुनने को भी प्रेरित करेगी। हम आभारी हैं महाविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों के, जिनके सहयोग से यह अंक संभव हो सका। आप सभी को पढ़ने, समझने और तकनीक की उपयोगिता को मानवीय दृष्टिकोण से मूल्यांकित करने के लिए आमंत्रित करते हैं।

डॉ राजपाल

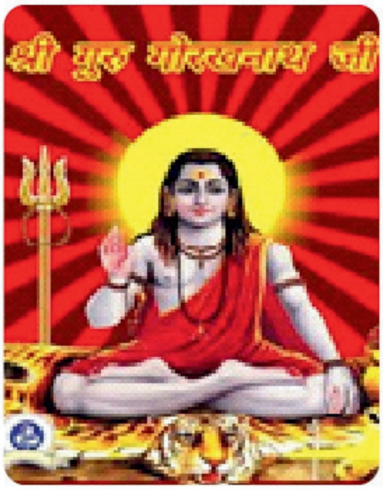

गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

गोरखनाथ का व्यक्तित्व बर्हिमुखी था। गोरखनाथ के बाद इतना प्रभावशाली और इतना महिमान्वित महापुरूष भारत वर्ष में दूसरा नही हुआ। संसार के क्रान्तिकारी पुरुषों में गोरखनाथ अपने युग के एक अद्वितीय पुरूष स्वीकृत है। गोरखनाथ ने गुरू की महत्ता पर विशेष प्रकाश डाला है। वो एक अच्छे शिष्य थे। गोरखनाथ कहते है कि हे गुणवानों और बुद्धिमानों! तुम अत्यन्त सिद्ध पुरुषों की वाणियों को सुनो तो पाओगे के सद्गुरु के चरणों में विनयान्वन होकर रहने से ही ज्ञान मिलता है और ज्ञान पाकर जीव जीवनपर्यन्त जागता रहता है। उसकी अज्ञान रात बीत जाती है। वह कभी माया में नहीं भूलता -

"सुणि गुणवंता सुणि बुधिवंता, अनंत सिधां की वाणी। सीस नवावत सत गुर मिलिया, जागत रैणि विहांणीं।'

सत्यज्ञान का शब्द सोने का टुकडा है। कोई भी उसे कसौटी पर कसकर देख सकता है। परंतु यह सौभाग्य उसी को प्राप्त होता है जो विनम्रतापूर्वक सद्गुरू की शरण में गया हो उसी को सद्गुरू का उपदेश लगता है और वही सद्गुरू धारण कर सकता है। निगुरा तो चालबाजी करता है। वह कहीं सिर झुकायें बिना अहंकारपूर्वक रहकर ज्ञान तथा मोक्ष चाहता है। अतः निगुरा (गुरू विमुख व्यक्ति) अवगुण एवं अज्ञान को धारण कर भटकता है।

"साच का सबद सोना का रेख निर्गुरां कौं चाणक सगुरा कौ उपदेश, गुर का मुंड्या गुंण मैं रहै। निगुरा भ्रमै औगुण गहै।।

गोरखनाथ को न धन का लोभ था, न स्त्री का वह इन सब चीजों को व्यर्थ मानते थे -

धन जोवन की करै न आस, चित्त न राषै कांमानि पास। नाद बिंद जाकै घटि जरै, ताकी सेवा पारवती करै।।'

वयस्क स्त्रियों के प्रति उनके हृदय में अत्यन्त श्रृद्धा थी। वे उनका माता के समान आदर करते थे। गोरखनाथ नें स्त्री को केवल माता के रूप में ही देखा है। जो स्नेह से बालक को पालती है। जिसमें वासना नही रहती। अत्यनत खेद से उन्होने एक स्थान पर कहा है -

"रूपे रूपे करूपे गुरूदेव, बाघनी भोले भोले, जिन जननी संसार दिषाया, ताकौ ले सूते षोले।।

तथा

थान दे गोरिए गोरष बाला माई बिन प्याले प्याला।
गिगांन ची डाल्हीला पालंबू गोरषबाला पौढिला।
देव लोक ची देव कंन्या, मृत लोक ची नारी।
पाताल लोक ची नाग कन्या, गोरषवाला भारी।
माया मारिली मावसी तजीली, तजीला कुटंब बंधू सहंसर कवल तहां गोरषवाला जहाँ मन मनसा सुरसंधू ।।2।।
आसा तजीला तृसना तजीला तजीला मनसा माई,
नौ षंड पृथ्वी फेरि नै आलौं गोरष रहीला मछिन्द्र ठांइ।।

युवती स्त्रियों को वह गार्हस्थ धर्म में पतिव्रता के रूप में देखना चाहते थे। उनके कामी स्वरूप से उन्हें घृणा थी। वे वासना से परे थे। लडकियों का शीलपूर्ण होना उन्हें अच्छा लगता था, स्त्री के प्रति उनका विचार उनके सिद्धान्तों में बड़ा हाथ रखता है। उपर्युक्त उदाहरण में कितनी यर्थाथवादी व्यंजना है -

"दासी नै नारी अरू घर द्वारी, तुम्हे बेस्यां न करम न कीज्योरे। विधवा नारी नौ संग करेस्यौ, तौ रोमि रोमि नरक पडोस्यों रे। एक बूदि कै कारणि आप सवारथि, तुम्हें बाल हत्या फल लेस्यौ रे। नर नारी दोन्यु नरकि पाडिस्यौ, घाणि, घालि पडेस्यौ रे। अंजनि भूला निरंजन चूका तुम्हें लीयां सालि म बालौ रे। मछिन्द्र प्रसादै जती गोरष बोल्या जीती सारि न हारौ रे।।'

शास्त्रो का उन्हें अच्छा ज्ञान था अन्यथा 'अमरौघशासनम्' मेंवे अन्य सम्प्रदायों का साराशं इतनी स्पष्टता से नही दे पाते। परंतु वे पंडिताऊपनको नीची चीज समझते थे। केवल पढ़ने से वह मुक्ति नही मानते थे। अक्खडपनउनमें इतना अधिक मिलता है जैसे सारे संसार से उन्हें किसी प्रकार का कोई भय नहीं है -

कैसैं बोलौं पंडिता देव कौंनै ठाई, निज तत निहारतां अम्हें, तुम्हें नाही पषांणची देवली पषांण चा देव, पषांण पूजिला कैसै, फीटीला सनेह सरजीव तेड़िला निरजीव पूजिला, पाप ची करणी कैसें दूतर तिरीला। तीरथि तीरथि सनांन करीला, बाहर धोये कैसें भीतरि भेदीला। ।3।। आदिनाथ नाती मछीन्द्रनाथ पूता, निज तत निहारै गोरष अवधूता । । 4।।'

गोरखनाथ अहिंसावादी थे, जीव हत्या के वह विरोधी थे। उनका कहना है कि मारना है तो मन की बुराईयों को मारो -

जीव सीव ना संगै बासा ना बधि षाइवा रे रूध्र मासा। टेक ।। घाव न घातिबा हंस गोतं, बंदंत गोरषनाथ निहारि पोतं । ।1।।मारिबा रे नरा मन द्रोही, जाकै बपबरण नहीं मास लोही।।2 सब जग ग्रसिया देव दांण, सो मन मरीबा रे गहि गुरू-ग्यांनबांण ।।3।। बसू क्या हतिये रे प्यंड धारी, जोग का मूल है दया दांनं। मारिये पंचभू मृघ लाजे चरैबुधि बाडी। भणत गोरषनाथ ये ब्रह्म ग्यांनं ।।

उनकी हिन्दी रचनाओं से यह बात स्पष्ट होती है कि वह पांडित्य को महत्व नहीं देते है-

वेद कतेब न षांणी बांणी। सब ढंकी तलि आंणी। गगनि सिषर महि सबद प्रकास्या। तहं बूझै अलष बिनांणी ।।
वेदे न सास्त्रे कतेबे न कुरांणे पुस्तके न बंध्या जाई। ते पद जांनां बिरला जोगी और दुनी सब धंधै लाई ।।

संयमपूर्वक जीवन व्यतीत करते हुये भी मस्त रहना उनकी रहने की विशेषता थी। ऐसी मस्ती में साधना भी निर्विघ्न भाव से चलती रहे, वही उनकी आकांक्षा थी।

"हसिबा षेलिबा रहिबा रंग। कांम क्रोध न करीबा संग। हसिबा षेलिवा गाइबा गीत। दिढ करि राषि आपनां चीत।। हसिबा षेलिवा धारिबा ध्यानं। अहनिसि कथिबा ब्रह्म गियांन। हसै षेले न करै मन भंग। ते निहचल सदा नाथ कै संग।

गुरु गोरखनाथ के पद

अवधू गागर कांधे पाणींहारी, गौरी कौंधे गौरा। घर का गुसाईं कौतिग चाहै, काहै न बंधौ जौरा ॥ टेक ॥ लूण कहै अलूणा बाबू, घृत कहै मैं रूखा।सलिल कहै प्यासा मूआ, अंन कहै मैं भूखा ॥पावक कहै मैं जाडण मूवा, कपड़ा कहै मैं नांगा। अनहद मृदंग बजावै, तहाँ पांगुल नाचन लागा ॥ आदिनाथ बिहवलिया बाबा, मछिंद्रनाथ पूता । अभेद भेद भेदीले जोगी, बदंत गोरख अवधूता ॥

हे अवधू ! जब शरीर (गागर) के कन्धे अर्थात् ऊर्ध्वभाग में कुण्डलिनी (पाणींहारी) पहुँच जाए और सुषुम्ना (गौरी) के मुख में चन्द्र नाड़ी (गौरा) का प्रवेश हो जाए और शरीर (घर) का स्वामी जीव चमत्कार (कौतिग) देखना चाहे तो काल (समय/ मृत्यु) को क्यों नहीं बाँधा जा सकता? इस स्थिति में नमक फीका (अलूणा) लगता है, घी रूखा प्रतीत होता है, जल (सलिल) की प्यास मर जाती है, अन्न की भूख नहीं रहती, आग/पाचक अग्नि (पावक) भी शीतलता के कारण मर जाती है, नंगे शरीर को कपड़े की अपेक्षा नहीं रहती। अब अनहद की मृदंग ध्वनि बजती है और पंगु आत्मा विभोर हो उठती है। हे आदिनाथ बाबा! मच्छन्दर का पुत्र गोरख आनन्द में विह्वल है। गोरख कहता है कि जो उस अभेद्य ब्रह्म का भेद जान लेता है, वह जोगी अवधूत कहलाता है।

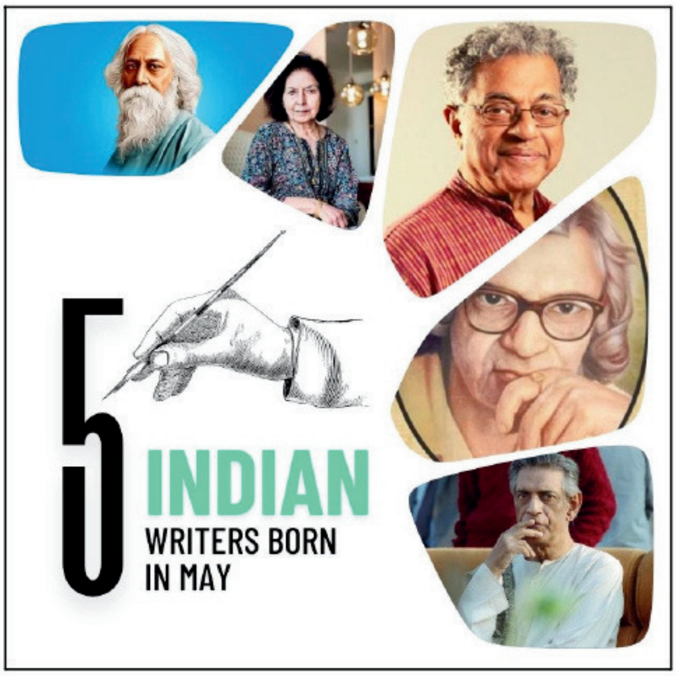

साहित्य जगत की एक आकर्षक यात्रा पर निकलने के लिए तैयार हो जाइए, क्योंकि हम मई महीने में जन्मे पाँच महान भारतीय लेखकों के जन्मदिन मना रहे हैं।

रवींद्रनाथ टैगोर की कालजयी कविताओं से लेकर सत्यजीत रे की सिनेमाई प्रतिभा, नयनतारा सहगल के साहसिक आख्यानों, सुमित्रानंदन पंत के काव्यात्मक आकर्षण और गिरीश कर्नाड की नाट्य प्रतिभा तक, इन सभी साहित्यिक हस्तियों ने भारतीय साहित्य पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। अपनी रचनाओं के माध्यम से, उन्होंने पाठकों को मंत्रमुग्ध किया है, विचारों को प्रेरित किया है और पीढ़ियों को प्रेरित किया है। इन साहित्यिक दिग्गजों द्वारा रचित मनोरम दुनिया में गोता लगाने के लिए हमारे साथ जुड़ें।

रवींद्रनाथ टैगोर: अनंत काल के कवि

7 मई, 1861 को जन्मे रवींद्रनाथ टैगोर एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे, जिनके साहित्यिक योगदान ने भारतीय साहित्य पर अमिट छाप छोड़ी है। उनकी रचनाओं में कविताएँ, गीत, निबंध और नाटक शामिल हैं। टैगोर की उत्कृष्ट कृति "गीतांजलि" के लिए उन्हें 1913 में साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला। "गीतांजलि" की एक पंक्ति आज भी गूंजती है, "जहाँ मन भयमुक्त हो और सिर ऊँचा हो।" टैगोर की विरासत आज भी कायम है क्योंकि उनके शब्द पीढ़ियों को प्रेरित करते रहते हैं।

सत्यजीत रे: भारतीय सिनेमा और साहित्य के उस्ताद

2 मई, 1921 को जन्मे सत्यजीत रे न केवल एक प्रसिद्ध फिल्म निर्माता थे, बल्कि एक विपुल लेखक भी थे। उनके जासूसी उपन्यासों की "फेलुदा" श्रृंखला, जिसमें प्रतिभाशाली जासूस फेलुदा की भूमिका थी, ने सभी उम्र के पाठकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। जटिल कथानक को प्रभावशाली चरित्र-चित्रण के साथ बुनने की रे की क्षमता ने उन्हें अपार प्रशंसा दिलाई। "फेलुदा" की उनकी एक यादगार पंक्ति है, "सत्य एक बड़ा शब्द है, क्योंकि यह एक साधारण तथ्य है जिसे सिद्ध करना बहुत कठिन है।" रे की रचनाएँ अपनी गहराई और प्रतिभा से दर्शकों को मंत्रमुग्ध करती रहती हैं।

नयनतारा सहगल: नारीवाद और स्वतंत्रता की आवाज़

10 मई, 1927 को जन्मी नयनतारा सहगल एक प्रतिष्ठित भारतीय लेखिका हैं, जो महिला मुद्दों और सामाजिक परिवर्तन के अपने प्रभावशाली चित्रण के लिए जानी जाती हैं। उनके उपन्यास, जैसे "रिच लाइक अस" और "ए सिचुएशन इन न्यू डेल्ही", भारतीय समाज और राजनीति की तीखी आलोचना करते हैं। स्वतंत्रता और पहचान जैसे विषयों की सहगल की निडर खोज ने उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार और कॉमनवेल्थ राइटर्स पुरस्कार दिलाया। "रिच लाइक अस" की एक पंक्ति जो गहराई से प्रभावित करती है, वह है, "स्वतंत्रता केवल बंधनों का अभाव नहीं, बल्कि स्वशासन की सकारात्मक शक्ति है।" सहगल का लेखन आज भी प्रेरणा और विचारोत्तेजना प्रदान करता है।

गिरीश कर्नाड: आधुनिक भारतीय रंगमंच की आवाज़

गिरीश कर्नाड, जिनका जन्म 19 मई, 1938 को हुआ था, एक प्रसिद्ध नाटककार, अभिनेता और फिल्म निर्माता थे। उनके नाटक, जैसे "तुगलक" और "हयवदन", भारतीय पौराणिक कथाओं और समकालीन मुद्दों की पड़ताल के लिए जाने जाते हैं। जटिल पात्रों के सशक्त चित्रण और विचारोत्तेजक कथाओं के लिए कर्नाड को ज्ञानपीठ पुरस्कार सहित कई पुरस्कार मिले। "तुगलक" की एक पंक्ति अत्यंत महत्वपूर्ण है, "सत्य के लिए झूठ बोलना और हत्या करना आना चाहिए।" भारतीय रंगमंच में कर्नाड का योगदान अतुलनीय है।

सुमित्रानंदन पंत: हिमालय के कवि

सुमित्रानंदन पंत, जिनका जन्म 20 मई, 1900 को हुआ था, प्रकृति और अध्यात्म से प्रेरित अपनी भावपूर्ण कविताओं के लिए जाने जाने वाले एक प्रमुख हिंदी कवि थे। उनकी रचनाएँ, जैसे "चिदंबरा" और "कला और बुध", हिमालय और मानव आत्मा के सार को दर्शाती हैं। पंत की काव्य प्रतिभा के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार और पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। उनकी एक मंत्रमुग्ध कर देने वाली पंक्ति है, "धरा की ममता के पुलक पर, देवता का धारण है।" पंत की कविताएँ आज भी अपनी कालातीत सुंदरता से गूंजती हैं।

डॉ० राजपाल: ओजस्वी वक्ता

डॉ० राजपाल का जन्म 12 मई 1979 को गांव कल्लरभैणी, ब्लॉक उकलाना जिला हिसार में एक समृद्ध परिवार में हुआ। वे अपनी बात को विनम्रता से सबके सामने रखते हैं। पर्यावरण से उनको बहुत अधिक लगाव है। डॉ० राजपाल को पठन, पाठन, लेखन, समाज सुधार, देश-प्रेम, पर्यावरण सरंक्षण, वृक्षारोपण में रुचि है। इनको विद्यार्थियों का पथ प्रदर्शन एवं कमजोर के लोगों की सेवा करके प्रसन्नता की अनुभूति होती है।समाज के बीच में रहना उनको अच्छा लगता है।वे ऐसे मिलनसार व्यक्ति है,जो सबके साथ बड़ा-छोटा, निर्धन-धनी, सुशिक्षित व अशिक्षित, विद्यार्थी व अध्यापक, किसान मजदूर सबसे अवसरानुकुल मिलते रहते हैं। वे एक सामाजिक प्राणी है और एक अच्छे नागरिक है। वे यथाशक्ति सबकी सहायता भी करते हैं और बहुत कर्तव्यपरायण है। बिना किसी भेदभाव और पक्षपात रहित होकर छोटे-बड़े सबके साथ मिलते हैं। डॉ० राजपाल के प्रेरणास्त्रोत श्री धर्मचन्द्र विद्यालंकार रहे हैं। डॉ० राजपाल संतराम बी०ए० से सर्वाधिक प्रभावित रहे हैं। अतः उनके जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर सत्संगति का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा है। इनका मानना है कि मनुष्य सामाजिक प्राणी है, अकेले जिंदगी बसर नहीं कर सकता, लोगों से घुलना-मिलना, उनके साथ वक्त बिताना और मिलजुलकर रहना हमारी फितरत भी है और जरुरत भी। इसके विपरित, अगर कोई व्यक्ति अकेला रहता है, लोगों से मिलता-जुलता नहीं, उसके साथ वक्त बिताने वाले लोग नहीं है, तो उसे एक बड़ी परेशानी समझा जाता है। एक अच्छा शिक्षक विद्यार्थियों के लिए वरदान होता है। शिक्षक को केवल वेतनभोगी ही नहीं होना चाहिए बल्कि विद्यार्थियों के हित और उनके भविष्य का भी उसको ध्यान रखना चाहिए। डॉ० राजपाल ने कई स्थानों पर अध्यापन कार्य किया है। विद्यार्थी अध्यापक के रुप में उनका बड़ा सम्मान करते है। वे पूरी निष्ठा से अध्यापन कार्य कर रहे हैं। विद्यार्थी उनके अध्यापन कार्य से बहुत संतुष्ट रहते है। अध्यापन कार्य को वे उत्तम कार्य मानते है, जो समाज सेवा का दूसरा रुप है।डॉ० राजपाल मधुरभाषी एवं ओजस्वी वक्ता है। उनकी व्याख्यान शैली मेघ की तरह धीरे-धीरे गम्भीर होती है। वे बिजली की तरह कड़कते नहीं है। वे अपने भाषण के माध्यम से श्रोताओं के साथ संवाद जोड़ते हैं। वे श्रोताओं के साथ संवाद करते है और उनसे बातचीत करते हुए अपनी बात को समझाते हैं।

किरण रानोलिया

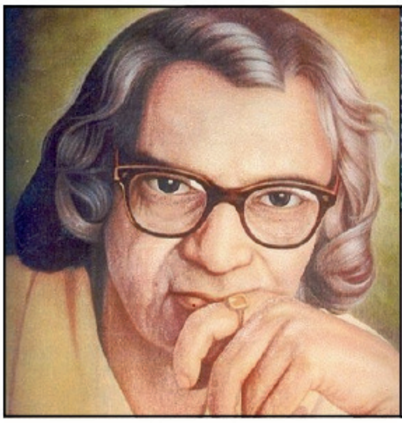

सुमित्रानंदन पंत
एक परिचय

सुमित्रानंदन पंत

नाम- सुमित्रानंदन पंत (गुसाईं दत्त)
जन्म- 20 मई 1900
जन्म भूमि- कौसानी, उत्तराखण्ड, भारत
मृत्यु- 28 दिसंबर, 1977
मृत्यु स्थान- इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत
कर्म भूमि- इलाहाबाद
कर्म-क्षेत्र- अध्यापक, लेखक, कवि
मुख्य रचनाएँ- वीणा, पल्लव, चिदंबरा, युगवाणी, लोकायतन, युगपथ, स्वर्णकिरण, कला और बूढ़ा चाँद आदि
विषय- गीत, कविताएँ
भाषा- हिन्दी
विद्यालय- जयनारायण हाईस्कूल, म्योर सेंट्रल कॉलेज
पुरस्कार-उपाधि- ज्ञानपीठ पुरस्कार, पद्म भूषण, साहित्य अकादमी पुरस्कार , 'लोकायतन' पर सोवियत लैंड नेहरु पुरस्कार
नागरिकता- भारतीय
आंदोलन- रहस्यवाद व प्रगतिवाद
रचनाएँ- सुमित्रानंदन पंत चिदंबरा 1958 का प्रकाशन है। इसमें युगवाणी (1937-38) से अतिमा (1948) तक कवि की 10 कृतियों से चुनी हुई 196 कविताएं संकलित हैं। एक लंबी आत्मकथात्मक कविता आत्मिका भी इसमें सम्मिलित है, जो वाणी (1957) से ली गई है। चिदंबरा पंत की काव्य चेतना के द्वितीय उत्थान की परिचायक है। प्रमुख रचनाएं इस प्रकार है:-
कविताएं-वीणा (1919), ग्रंथि (1920), पल्लव (1926), गुंजन (1932), युगांत (1937), युगवाणी (1938), ग्राम्या (1940), स्वर्णकिरण (1947), **कविताएं**-स्वर्णधूलि (1947), उत्तरा (1949), युगपथ (1949), चिदंबरा (1958), कला और बूढ़ा चाँद (1959), लोकायतन (1964), गीतहंस (1969)।

कम्प्यूटर विषयक

हिंदी कंप्यूटिंग
Hindi Computing
देवनागरी लिपि
Devanagari Script
यूनिकोड
Unicode
मंगल फ़ॉन्ट
Mangal Font
इनस्क्रिप्ट कीबोर्ड
Inscript Keyboard
रेमिंगटन कीबोर्ड
Remington Keyboard
फोनेटिक टाइपिंग
Phonetic Typing
लिप्यंतरण
Transliteration
कीबोर्ड लेआउट
Keyboard Layout
कुंजीपटल
Keyboard
पाठ संपादक
Text Editor
टाइपिंग सॉफ़्टवेयर
Typing Software
वर्तनी जांच
Spell Check
टाइपिंग गति
Typing Speed
कुंजी संयोजन
Key Combination
स्वर और व्यंजन कुंजी
Vowel and Consonant Keys
इनपुट विधि
Input Method
भाषा प्रविष्टि विकल्प
Input Language Option

कहानियाँ- पाँच कहानियाँ (1938), **उपन्यास**- हार (1960), **आत्मकथात्मक संस्मरण**- साठ वर्ष : एक रेखांकन (1963)।

भाषा-शैली - कवि पन्त का भाषा पर असाधारण अधिकार है। भाव और विषय के अनुकूल मार्मिक शब्दावली उनकी लेखनी से सहज प्रवाहित होती है। यद्यपि पन्त की भाषा का एक विशिष्ट स्तर है फिर भी वह विषयानुसार परिवर्तित होती है। पन्तजी के काव्य में एकाधिक शैलियों का प्रयोग हुआ है। प्रकृति-चित्रण में भावात्मक, आलंकारिक तथा दृश्य विधायनी शैली का प्रयोग हुआ है। विचार-प्रधान तथा दार्शनिक विषयों की शैली विचारात्मक एवं विश्लेषणात्मक भी हो गई है। इसके अतिरिक्त प्रतीक-शैली का प्रयोग भी हुआ है। सजीव बिम्ब-विधान तथा ध्वन्यात्मकता भी आपकी रचना-शैली की विशेषताएँ हैं।

अलंकरण- पन्तजी ने परम्परागत एवं नवीन, दोनों ही प्रकार के अलंकारों का भव्यता से प्रयोग किया है। बिम्बों की मौलिकता तथा उपमानों की मार्मिकता हृदयहारिणी है। रूपक, उपमा, सांगरूपक, मानवीकरण, विशेषण-विपर्यय तथा ध्वन्यर्थ-व्यंजना का आकर्षक प्रयोग आपने किया है।

छंद- पन्तजी ने परम्परागत छन्दों के साथ-साथ नवीन छंदों की भी रचना की है। आपने गेयता और ध्वनि-प्रभाव पर ही बल दिया है, मात्राओं और वर्णों के क्रम तथा संख्या पर नहीं। प्रकृति के चितेरे तथा छायावादी कवि के रूप में पन्तजी का स्थान निश्चय ही विशिष्ट है। हिन्दी की लालित्यपूर्ण और संस्कारित खड़ी बोली भी पन्तजी की देन है। पन्तजी विश्व-साहित्य में भी अपना स्थान बना गए हैं।

पुरस्कार- महाकवि की स्मृतियों को संजोता राजकीय संग्रहालय सुमित्रानंदन पंत को पद्म भूषण (1961) और ज्ञानपीठ पुरस्कार (1968) से सम्मानित किया गया। कला और बूढ़ा चाँद के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, लोकायतन पर 'सोवियत लैंड नेहरु पुरस्कार' एवं 'चिदंबरा' पर इन्हें 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ।

स्वतंत्रता संग्राम में योगदान- हरिवंशराय बच्चन, सुमित्रानंदन पंत और रामधारी सिंह 'दिनकर' 1921 के असहयोग आंदोलन में उन्होंने कॉलेज छोड़ दिया था, पर देश के स्वतंत्रता संग्राम की गंभीरता के प्रति उनका ध्यान 1930 के नमक सत्याग्रह के समय से अधिक केंद्रित होने लगा, इन्हीं दिनों संयोगवश उन्हें कालाकांकर में ग्राम जीवन के अधिक निकट संपर्क में आने का अवसर मिला। उस ग्राम जीवन की पृष्ठभूमि में जो संवेदन उनके हृदय में अंकित होने लगे, उन्हें वाणी देने का प्रयत्न उन्होंने युगवाणी (1938) और ग्राम्या (1940) में किया। यहाँ से उनका काव्य, युग का जीवन-संघर्ष तथा नई चेतना का दर्पण बन जाता है। स्वर्णकिरण तथा उसके बाद की रचनाओं में उन्होंने किसी आध्यात्मिक या दार्शनिक सत्य को वाणी न देकर व्यापक मानवीय सांस्कृतिक तत्त्व को अभिव्यक्ति दी, जिसमें अन्न प्राण, मन आत्मा, आदि मानव-जीवन के सभी स्वरों की चेतना को संयोजित करने का प्रयत्न किया गया।

1. Kajal = 12/5/2001
2. Mohit = 15/5/2003
3. Pooja = 19/5/2002
4. Monika = 30/5/2001
5. SONAL - 08-05-2001
6. KARAN - 08-05-2000
7. KHUSHBOO - 02-05-2002
8. NISHA - 15-05-2003
9. SONU - 29-05-2002

साहित्य प्रश्नोत्तरी

1. चौरासी सिद्धों में सबसे ऊँचा स्थान किस सिद्ध का माना जाता है? - लुइपा
2. सिद्ध कवि लुइपा के गुरु कौन थे? -शबरपा
3. किस सिद्ध-कवि की रचनाओं में रहस्य-भावना की प्रधानता है? - लुइपा
4. सिद्ध साहित्य का विकास कहाँ हुआ? - पूर्वी भारत में (बिहार, बंगाला, उड़ीसा, असम)
5. 'नाद न बिंदु न रवि न शशि मण्डल' - पंक्ति किसकी है? -सरहपा
6. 'पंडिअ सअल सत्त बक्खाणइ। देहहि रुद्ध बसंत न जाणइ अमणागमण ण तेन विखंडिअ। तोवि णिलज्जइ भणइ हउँ। पंडिअ। - पंक्तियाँ किसकी हैं? - सरहपा
7. काआ तरुवर पंच विड़ाल' - पंक्तियाँ किसकी हैं? - लुइपा
8. 'सहजे थिर करि वारुणि साथ' - पंक्तियाँ किसकी हैं? - विरूपा
9. रूक्क ण किज्ज्इ मंत्र ण तंत' - पंक्तियाँ किसकी हैं? - कण्हपा
10. नगर वाहिरे डोंबी तोहरि कुड़िया छइ' - पंक्तियाँ किसकी हैं? - कण्हपा
11. 'गंगा जउँना माझे रे बहइ नाई' - पंक्तियाँ किसकी हैं? डोम्भिपा
12. हाउनिवासी खमण भतारे, मोहारे विगोआकहण न जाइ।' - पंक्तियाँ किसकी हैं? - कुक्कुरिया
13. 'ससुरी निंद गेल, बहुड़ी जाग' पंक्तियाँ किसकी हैं? - कुक्कुरिया
14. सिद्धों का विकास किससे हुआ? बौद्ध धर्म के ब्रजयान शाखा से
15. महाराष्ट्र के संत ज्ञानदेव के अनुसार गोरखनाथ की शिष्य परंपरा है- आदिनाथ, मत्स्येंद्रनाथ, गोरखनाथ, गैंगीनाथ, निवृत्तिनाथ, ज्ञानेश्वर।
16. नाथपंथियों का हठयोग साधना का विकास किसकी प्रतिक्रिया में हुआ? - सिद्धों की वाममार्गी-भोगप्रधान योग साधना की प्रतिक्रिया में

शब्द-युग्म
(समान-सा उच्चारण किंतु भिन्न अर्थवाले शब्द)

प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं जो उच्चारण एवं लेखन में काफी समानता लिए हुए होते हैं किंतु थोड़ी-सी भिन्नता से भी उनके अर्थ नितांत अलग-अलग होते हैं। इस प्रकार के शब्दों के उच्चारण एवं लेखन की समानता-असमानता और अर्थ-भिन्नता के प्रति विशेष जागरूकता नहीं दिखाई जाए तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है। इसलिए भाषा की शुद्धता की दृष्टि से इस प्रकार के शब्दों की विशेष जानकारी आवश्यक है। शब्द का अर्थ मूलतः उसके प्रयोग में निहित रहता है, अतः परीक्षा में भी शब्द के अर्थ को वाक्य में प्रयोग भगों करके स्पष्ट करना चाहिए।

शब्द	अर्थ
अवर	नीचे का
अपर	अन्य, पहला
अपार	असीम, विस्तृत
अंबुज	कमल
अंबुद	बादल
अंबुधि	समुद्र
अरबी	अरब की भाषा
अरवी	एक कंद
अवशेष	बचा हुआ

सामाजिक समरसता के स्तंभ गुरु गोरखनाथ : डॉ. योगी अनूप नाथ

पाठकपक्ष न्यूज

हांसी, 23 मई : आज पुट्ठी सैमन के राजकीय विद्यालय में गुरु गोरखनाथ स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसमे उमंग वेलफेयर सोसायटी एवं ग्राम पंचायत द्वारा बोर्ड परीक्षाओं में मेरिट हासिल करने वाले होनहार विद्यार्थी सम्मानित किए गए। प्राचार्य डॉ. योगी अनूप नाथ ने गुरु गोरखनाथ स्मृति दिवस की बधाई देते हुए कहा कि आदि अनादि काल से भगवान शिव के अवतार गुरु गोरखनाथ ने योग, विज्ञान, गणित, साहित्य, भाषा साधना, तप, जप, समाधि, धर्मजागरण के साथ-साथ समाजिक समरसता सद्भावना पर विशेष कार्य करते हुए अखंड भारत बनाने मे सहयोग किया। उन्होंने अपनी शब्दी में लिखा है संसार में मनुष्य की दो ही जातियां है नर और नारी और एक ही धर्म है मानवतावाद। इसके अलावा कोई भेद नहीं, वर्तमान में धर्म और जाति संकीर्ण मानसिकता पर आधारित हो गई है, जिसकी बेड़ियों को तोड़ने में गोरखनाथ के विचारों की देश को नितांत आवश्यकता है। योगी ने कहा कि गोरखनाथ के शिष्य जाहरवीर गोगा को लोकदेवता के रुप में पूरे उतर

भारत में पूजा जाता है। करोड़ों लोग गोरख टीला एवं गोगा को समाधि पर लगने वाले मेले में जाते हैं, जिसमे सभी बिना भेद भाव के एकरूप होकर अखंड भारत के दर्शन करते हैं। सरपंच धर्मराज ने बच्चो को कड़ी मेहनत करने के साथ-साथ संस्कारों को धारण करने पर बल दिया। समिति सदस्य सुरेंद्र पान्नू ने पर्यावरण, स्वच्छता अभियान पर बल देते हुए बच्चों को कड़ी मेहनत से कैरियर निर्माण पर बल दिया। इस अवसर पर अनिल मुख्याध्यापक, अजय सैनी, कपिल शर्मा, राममेहर सिवाच, प्रशांत शर्मा, वीरेंद्र शास्त्री, सुदेश, सरला, संतोष, मधु, नवीन यादव, रणधीर, विजेंद्र सहित पंचायत सदस्य सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

प्रशासनिक शब्दावली

राजकीय प्रशासन एवं अन्यत्र भी हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं का चलन है इसलिए अंग्रेज़ी एवं हिंदी दोनों भाषाओं की आधारभूत पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होना आवश्यक है। यहाँ भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित विविध शब्दावलियों से मुख्य मुख्य शब्दावली दी जा रही है। यह शब्दावली ही अधिकृत है, अतः शब्दों के इसी हिंदी अनुवाद को प्रयोग में लेना चाहिए।

Dissolution = भंग/विघटन

District headquarters = ज़िला मुख्यालय

Ditto = यथोपरि

Division = विभाजन/मंडल/प्रभाग

Document = प्रलेख/दस्तावेज़

Domicile = अधिवास

Dormant Case = प्रसुप्त मामला

Drawing = रेखाचित्र/आलेख/ चित्रांकन/आदान

Drawing officer = आहरण अधिकारी

Due = देय/नियत/प्राप्य

Due date = नियत तिथि

Duly = विधिवत्

Duplicate = अनुलिपि

Duration = अवधि

Duress = दबाव

Duress = दबाव

During the pleasure of = की इच्छा पर्यंत

Duty = काम

Early action = शीघ्र कार्यवाही

Ear mark = चिह्नित

Earned leave = अर्जित अवकाश

Earnest money = अग्रिम धन/बयाना

Economy = अर्थव्यवस्था/किफ़ायत

Efficiency bar = दक्षतारोध

Eject = बेदखल करना

Elapse = बीतना/बीत जाना

Electorate = निर्वाचक-सूची

Eligible = पात्र

Eliminate = निकाल देना

Embezzlement = ग़बन

Emblem = प्रतीक/चिह्न

स्मृति शेष

Late- Smt. Bimla Devi
20-08-1981 To 22-04-2025

तुम्हारे बाद

तुम्हारे जाने के बाद
हर सुबह एक सवाल लेकर आती है—
"आज कैसे जीऊँगा?"
और हर रात
एक अनुत्तरित चुप्पी छोड़ जाती है...

मैं तुम्हारी चप्पलें
दरवाज़े के पास ही रखता हूँ,
जैसे तुम कहीं आस-पास हो
बस आवाज़ देने भर की दूरी पर...

तुम्हारा पसंदीदा गमला
अब भी खिड़की पर है,
मगर उसके फूल
मुरझाने लगे हैं
मेरी तरह...

कमरे की हर चीज़
तुमसे बातें करती है,
मगर मैं अब उनकी भाषा
नहीं समझ पाता...

तुम्हारी यादों का साया
इतना गहरा है कि
धूप में भी
ठंड लगती है...

हाथ थामे

तुम्हारी याद का हाथ अब भी,
मेरे कंधे पर रखा रहता है।
जब रास्ता थक जाता हूँ मैं,
तुम्हारी बातें सहारा देती हैं।

किताब के पन्ने पलटते हुए,
तुम्हारी सांस की गर्मी महसूस
होती है।
हर अक्षर के नीचे छुपी है,
तुम्हारी उंगली की रेखा अब
भी।

रसोई में बिखरे मसाले,
तुम्हारे हाथों के छूने का हिसाब
रखते हैं।
चाय की चुस्की में मिल जाती
है,
तुम्हारी डांट की मिठास अब
भी।

सुबह के अखबार में तुम,
कुछ लाइनें छोड़ जाती हो।
शाम की चुप्पी में तुम,
चाय का कप थमा जाती हो।

मेरी हर सांस पर लिखा है,
तुम्हारा नाम बिना आवाज़ के।
हर कदम पर चलती हो साथ,
बिना जूते पहने, बिना बताए।

जीने का सिलसिला

तुम्हारे बाद ज़िंदगी,
एक किताब-सी हो गई है -
कुछ पन्ने खाली,
कुछ पर तेरे हस्ताक्षर,
और बाकी...
मेरी लिखावट में ज़िंदगी।

हर सुबह मैं तुमसे पूछता हूँ,
"आज क्या लिखूँ?"
और तुम्हारी चुप्पी में,
एक नया वाक्य जन्म लेता है।

मैंने सीखा है अब
तुम्हारी यादों को
काँच के शीशे की तरह नहीं,
बल्कि धूप की किरणों की तरह संभालना
-
जो छूने से नहीं टूटतीं,
बस रोशनी बाँटती हैं।

तुम्हारे खालीपन में मैंने
अपने हाथों से गढ़े हैं
नए रिश्ते -
तुम्हारी दया से मेरी ममता,
तुम्हारे सब्र से मेरी हिम्मत,
तुम्हारे प्यार से मेरी प्रार्थना।

आज जब लोग पूछते हैं
"कैसे जी रहे हो?"
तो मैं दिखाता हूँ
उस चूल्हे को जो अब भी जलता है,
उस बगीचे को जहाँ नई कलियाँ खिलती
हैं,
उस आईने को जो अब भी मुस्कुराना
सिखाता है।

मौत ने तुम्हें चुरा लिया,
पर तुम्हारे प्यार ने
मुझे एक और जन्म दिया है -
जहाँ तुम नहीं हो,
मगर तुम्हारे बिना भी
तुम ही हो...

शब्दों का श्राद्ध

तेरे जाने के बाद
मेरे शब्द,
अधूरे अक्षरों की तरह
काग़ज़ पर मरने लगे हैं...
हर कविता में
तुम्हारा नाम लिखते-लिखते
क़लम थक गया है।

क्या लिखूँ?
जो तुम नहीं सुनोगी
वो गीत किस काम का?
जो तुम नहीं पढ़ोगी
वो अल्फ़ाज़ क्यों बनें?

मेरी डायरी में
तुम्हारी यादों के पन्ने
धीरे-धीरे
सफ़ेद होते जा रहे हैं...
जैसे सर्दियों की धूप में
कुहासा उड़ रहा हो।

कभी लिखता हूँ तो लगता है
मानो तुम्हारी साँसें
मेरे शब्दों में घुल गई हों -
हर 'क' में तुम्हारी खांसी,
हर 'म' में तुम्हारी मुस्कान,
हर विराम पर तुम्हारा हाथ।

और जब नहीं लिख पाता,
तो याद आती है तुम्हारी वो बात -
"जो दिल में हो वही काग़ज़ पर डालो,
चाहे वो स्याही न हो...
आँसू ही क्यों न हो।"

खालीपन

तुम्हारे जाने के बाद,
हर चीज़ वही है... बस तुम नहीं हो।
सुबह की चाय अधूरी लगती है,
तुम्हारे हाथों के छूने का इंतज़ार रह जाता है।

मैंने तुम्हारी साड़ियाँ नहीं छुईं अभी,
तुम्हारी खुशबू अटकी है उनकी तहों में।
रात को जब बिस्तर खाली होता है,
तो लगता है दिल का कोई हिस्सा भी खिसक गया है।

तुम्हारे फोटो से आँखें मिलाता हूँ,
मुस्कुराने की कोशिश करती हो जैसे...
पर दर्द की लकीरें
इतनी गहरी हैं कि आँसू छलक आते हैं।

लोग कहते हैं—"समय सब ठीक कर देगा",
मगर ये घड़ी की टिक-टिक
बस वक़्त को लम्बा खींचती है।
तुम्हारी यादों का बोझ
हर साँस के साथ भारी होता जाता है।

कभी-कभी रात में जागकर
तुम्हारा नाम पुकार देता हूँ...
और फिर सुनता हूँ
खालीपन का जवाब देता सन्नाटा ।

पुस्तक समीक्षा

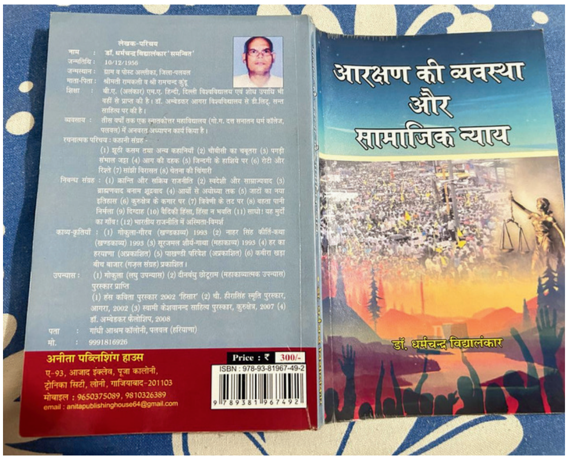

लेखक: डॉ. धर्मचन्द्र विद्यालंकार
पुस्तक: “आरक्षण की व्यवस्था और सामाजिक न्याय”
📖 मूल्य: 300/-
प्रकाशक: अनीता पब्लिशिंग हाउस, गाजियाबाद

'समरथ को नहीं दोष गुसाई' और 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' जैसी निबन्ध कृतियाँ डॉ० धर्मचन्द्र, विद्यालंकार की लौह-लेखनी द्वारा लिखित ग्यारहवीं और बारहवीं हैं। इसमें इस निबन्धकार की सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना प्रखरतम रूप में ही प्रकट हुई है। राजनीति से लेकर इतिहास-बोध और धर्म-दर्शन से लेकर सांस्कृतिक चिन्तन उनकी अपनी ही विशेषता है। ऐतिहासिक निबन्धों को पढ़ने पर ऐसा आभास होता है कि वे एक पेशेवर इतिहासज्ञ और पुरातत्त्व वेत्ता हैं। बल्कि इतिहासकारों एवं समाजशास्त्रियों के लिए डॉ० विद्यालंकार के निबन्ध नवीन शोध-सामग्री भी प्रदान ही करते हैं क्योंकि उनका तथ्यों का बारीकी के साथ अन्वेषण और तत्त्वचिन्तन उन्हें डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल जैसे सांस्कृतिक और ऐतिहासिक निबन्धकार के रूप में ही खड़ा करता है।

महापण्डित राहुल सांकृताययन की गवेषणापूर्ण निबन्धात्मक चिन्तन-शैली का भी प्रभूत प्रभाव उनके निबन्धों पर देखा जा सकता है।

अस्तु, एक ही विषय पर कई-कई निबन्ध क्रमिक रूपेण रचकर डॉ धर्मचन्द्र विद्यालंकार ने प्रवन्धात्मक गद्य-ग्रन्थों का सा ही आभास अपने पाठको को दिया है। उन्होंने वर्तमान काल की राजनीतिक विसंगतियों से भी अपना मुँह नहीं चुराया है। बल्कि उन्होंने समकालीन समस्याओं के साथ वैचारिक मुठभेड़ भी जमकर यहाँ पर की है। अतत्व इनके निबन्धों में बजाय कोरी भावंप्रेवणता एवं कलात्मकता के स्थान पर एक प्रकार की वैचारिक विदग्धता और गंभीरता भी है। इतिहास और समाज-शास्त्रीय गम्भीर चिन्तन ने इस निबन्ध कृति के निबन्धों को एक नई वैचारिक धार भी दी है। भाषा शैली की आरक्षण की व्यवस्था और सामाजिक न्याय प्राञ्जलता एवं प्रौढता भी यहाँ पर समीक्षात्मक निबन्धों में भली-भाँति परिलक्षित होती है। कई जीवनीपरक निबन्ध भी सवलित हैं। अतएव यह प्रति ज्ञानवर्धक और रोचक भी है।